प्रेयसी

छोड़ देता हूँ निढाल

अपने को उसकी बाँहों में

बालों में अंगुलियाँ फिराते–फिराते

हर लिया है हर कश्ट को उसनें

एक षिषु की तरह

सिमटा जा रहा हूँ

उसकी जकड़न में

कुछ देर बाद

खत्म हो जाता है

द्वैत का भावं

गहरी साँसों के बीच

उठती–गिरती धड़कनें

खामोष हो जाती हैं

और मिलने लगती हैं आत्मायें

मानो जन्म–जन्म की प्यासी हों

ऐसे ही किसी पल में

साकार होता है

एक नव जीवन का स्वप्नं

कृश्ण कुमार यादव

भारतीय डाक सेवा

वरिश्ठ डाक अधीक्षक, कानपुर नगर मण्डल,कानपुर (उ0प्र0)–208001

kkyadav.y@rediffmail.com